SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महाकवि बाणभट्ट प्रणीतम् कथा 'कादम्बरी' में नदियों का स्वरूप

संगीता आर्या, Ph. D., संस्कृत विभाग
राजकीय स्नात्तकोतर बांगड़, महाविद्यालय, पाली, राजस्थान, भारत
खुशवन्त कुमार माली, शोधार्थी, संस्कृत विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
संगीता आर्या, Ph. D.
खुशवन्त कुमार माली, शोधार्थी
E-mail : sangeetaarya1968@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/09/2024
Revised on : 24/11/2024
Accepted on : 04/12/2024
Overall Similarity : 00% on 26/11/2024

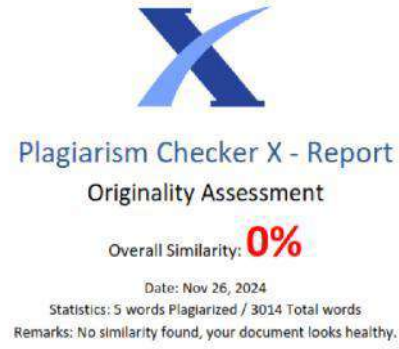

शोध सार

संस्कृत साहित्य में अत्यंत विशद साहित्य हैं। पुरुषार्थ चतुष्टय का यथार्थ निदर्शन वैश्विक साहित्य को संस्कृत वांगमय की ही देन हैं। ऐसा कोई विषय नहीं जो वैज्ञानिक चिंतन सह देववाणी में सामदृत न हो। इसी क्रम में संस्कृत कवियों का प्रकृति वर्णन मनोज्ञ रूप में समीक्षकों को चिंतन आलाप की नई दृष्टि देता हैं। कवियों द्वारा प्रकृति का सांगोपांग निदर्शन काव्य जगत में उन्हें विशिष्ट स्थापित करता हैं। वे प्रकृति के विविध घटकों यथा – नदी, प्रस्तर, निर्झर, वन्यजीव, वनस्पति का यथार्थ समन्वित मनोज्ञ निदर्शन करते हैं। शोध्य विषय में नदियाँ का विशिष्ट वर्णन हुआ। वे साहित्य में अत्यंत द्योतक स्वरूप में समादृत हैं। वे आलंकारिक नायिका, मोक्षदायनी, पुण्य प्रदायिनी, शुभदा, मंगलदायनी, जीवनदायनी, मातृ स्वरूपा, पुण्य फल प्रदायनी इत्यादि स्वरूपों में लोकमंगल का पुण्य कर्म कर रही हैं। उनकी प्रसंग वर्णन में उपस्थित सादर स्वतः प्रार्थनीय बन पड़ती हैं। यदि प्रकरण वर्णन में उन्हें छोड़ दिया जाएँ तो समस्त प्रसंग वर्णन अधूरे बन पड़ेंगे। इसी से उनका महत्व स्वतः स्पष्ट हो जाता हैं। शोध्य विषय में अत्यंत द्योतक एवं पतितपावनी इत्यादि महनीय स्वरूपों में समादृत गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, वेत्रवती, आकाशगंगा, सरस्वती एवं मंदाकिनी देव सरिताएं लोक मंगल का पुण्यकर्म कर रही हैं। वर्तमान भौगोलिक परिस्थितियों में इनकी पवित्रता, शुचिता का ह्रास हुआ हैं जो अत्यंत चिन्ता का विषय हैं। भारत जैसे महादेश में जहाँ नदियों को माता कहाँ जाता हैं वहाँ उनकी प्रदूषण युक्त दशा भारतीय मनीषा पर प्रश्नचिन्ह हैं। केवल यमुना के प्रसंग में प्रदूषण का स्तर मानव जीवन के लिए सबसे बडा अभिशाप हैं। केवल यमुना ही नही अपितु अन्य देव सरिताओं की भी यही स्थिति हैं। प्रदूषित नदियों का जल

मानव जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा हैं। इस दिशा में अत्यधिक कार्य करने की आवश्यकता हैं।

मुख्य शब्द

महाकवि बाणभट्ट, कादम्बरी, नदी, संस्कृत.

संस्कृत लौकिक साहित्य की अनुपम निधि 'कादम्बरी' में विवेच्य शोध्य विषय का सांगोपांग निदर्शन नामोल्लेख रूप विविध वर्णन प्रसंगों व पृथक विस्तृत वर्णन नदियों के अजस्र प्रवाह रूप में समादृत हैं। यथाः

नदियों के प्रवाह से अलंकृत कैलास[1], नदियों को हटाते हुए चन्द्रापीड़ की अविरल यात्रा[2], क्लान्त इन्द्रायुध को नदी जल में स्नान करवाना और जल ग्रहण करवाना[3], कैलास को नदियों की तरंगों से तर हवा के झोकें[4], धूल/रजोगुण प्रसार से मलीन नदियाँ[5], नदी जल प्रवाह का वेग से प्रवाहित होना व नदी बहाव विपरीत प्रवाहित होना[6], पुष्प परागों से सुवाशित क्रीडा पर्वत नदी तट[7], तमालपत्र से निर्मित वनराजि तथा कुमुदरजरूपी बालु प्रसारित तटवाली नदियाँ[8], पहाडों की छोटी–छोटी नदियाँ[9], नदियों के विस्तृत तट[10], तीव्र वर्षा सदृश वेग से प्रवाहित होने वाली नदी[11], वर्षा से नदियों का पूर्ण होना व दुस्तर प्रवाह[12], एकैक नदियों को पार करना[13], विलासिनी नदियों के तट[14], पानी दूर जाने पर सुखपूर्वक पार करने योग्य नदियों के तटों पर प्रसारित बालुकाएँ[15], इत्यादि रूपों मे विभिन्न वर्णन प्रसंगों से नदी विषयक वर्णन निरूपित है। इसके अतिरिक्त पृथक नदियों के नामाल्लेख सह विस्तृत वर्णन प्रसंगों सह प्राप्त होता है; जो दृष्ट्व्य हैः

1. **आकाशगंगाः** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में आकाशगंगा नदी का मनोज्ञ निदर्शन वर्णित हैं। ऐरावत की सूँड से उखाडकर गिरायी हुई आकाशगंगा की कमलिनियाँ खिले[16], असंख्य खिले पंकजों वाली[17], उत्पन्न कमलों के मृणाल से युक्त[18], जलधारा से प्रक्षालित[19], प्रवाह में जायमान मृणाल[20], समस्त भूमण्डल को उज्ज्वल करते हुए पृथ्वी पर आगमन[21], कमलिनी के कोमल मृणाल युक्त निर्मल[22], जल इत्यादि विविध रूपों में आकाश गंगा का निदर्शन कादम्बरी गद्य में प्राप्त होता हैं।

इसे बद्रीनाथ में अलकनन्दा, के नाम से जाना जाता है। यह उत्तराखण्ड में 'शतपथ' और 'भगीरथ खण्डक' नामक हिमनदों से उद्गमित होती है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में अलकापुरी का वर्णन किया है। पुनश्च कुमार सम्भवं में पर्वतराज हिमालय को पृथ्वी का मानदण्ड[23] कहा है। सम्भवतः यह कैलास पर्वत के निकट 'अलकनंदा' क्षेत्र ही अलकापुरी रहा होगा।

पौराणिक मान्यता के अनुसार गंगा को स्वर्ग से धरती पर अवतरित करने हेतु भगवान शिव ने इसे अपनी जटाओं में स्थान दिया था। अनन्तर इनका पृथ्वी पर अवतरण हुआ। भगवान शिव का निवास स्थल भी हिमालय का कैलास पर्वत ही माना जाता है।

अलकनंदा कैलास और बदरिकाश्रम की यात्रा कर देवप्रयाग पहुँचती हैं। वहाँ इसका संगम भागीरथी से होता हैं। अलकनंदा की पाँच सहायक नदियाँ हैं, जो गढ़वाल क्षेत्र में पांच पृथक–पृथक स्थालों पर संगम द्वारा 'पंचप्रयाग' का निर्माण करती है, विष्णु प्रयाग में धौली गंगा का अलकनंदा से संगम होता है। नंदप्रयाग में नंदाकिनी नदी का अलकनन्दा से संगम होता है। कर्ण प्रयाग में पिंडारी नदी का संगम तो रूद्रप्रयाग में मंदाकिनी का संगम होता है, वहीं अंतिम देवप्रयाग में भागीरथी का संगम होता हैं।

अलकनन्दा में भागीरथी की अपेक्षा अधिक जल रहता हैं। अलकनन्दा नदी धौली और विष्णु गंगा नदियों से मिलकर बनी हैं। इसकी अन्य सहायक नदियां पिंडार और मन्दाकिनी हैं।[24] प्रसिद्ध तीर्थ स्थल एवं चार धाम में समादृत बद्रीनाथ इसी के तट पर स्थित हैं।

2. **गोदावरीः** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में गोदावरी नदी का पौराणिक और ऐतिहासिक निदर्शन वर्णित हैं। दण्डकारण्य प्रसंग में अगस्त्य ऋषि के आश्रम के निकट प्रवाहित[25], उसके प्रखर वेग को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि मानो समुद्र के अगस्त्य द्वारा ग्रहण किए जाने पर वह माथे पर विधवा सदृश एक श्रेणी धारण करके अपने पति का अनुसरण करना इत्यादि रूपों में कादम्बरी गद्य में गोदावारी निदर्शन प्राप्य

हैं। इसका अत्यंत मनोज्ञ हृदयआह्लादकारी दैवीय, पुण्यशाली निदर्शन साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हैं। इसका उद्‌गम नासिक की पहाडियों में त्र्यम्बकं नामक स्थल है। इसकी कुल लम्बाई 1465 किमी. है। यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है।[26] यह पश्चिमी घाट से पूर्वी घाट तक प्रवाहित होती हैं।

गोदावरी नदी के तट पर सुप्रसिद्ध त्र्यंबकेश्वर, नासिक, पैठण सदृश तीर्थ स्थल स्थित है। अगस्त्य आश्रम, पंचवटी[27] इसके समीप स्थित थे। इसकी मुख्य सहायक नदियाँ पूर्णा, कदम, प्राहिता, सबरी, इंद्रावती, मुजीरा, सिंधुकाना, मनेर तथा प्रवर है। इसके तट पर पवित्र स्नान की परम्परा का निर्वहन किया जाता है।[28] अनेक पवित्र कुण्ड, सीता गुफा, गोवर्धन तथा तपोवन, पंचवटी इत्यादि का अत्यंत माहात्म्य है। सम्भवतः तट पर स्थित प्रसिद्ध नासिक नगर[29] 'वहीं स्थल है जहाँ लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी थी क्योंकि 'नासिक' 'नासिक्य' शब्द से व्युत्पन्न है जो इस रूप में परिलक्षित भी होता है। यहां प्रतिवर्ष भव्य रामनवमी महोत्सव मनाया जाता हैं।[30] गोदावरी में अवकर, प्लास्टिक, कांच व कांच से बने पदार्थ फैंकने, वाहित मल, प्लास्टर ऑफ पेरिस की रासायनिक व आयोजनों से फैकी गंदगी के चलते प्रदूषण स्तर डरावना हैं।[31]

3. **गंगाः** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में गंगा नदी का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं दैवीय स्वरूप निदर्शन वर्णित हैं। यमुना का गंगा से संगम[32], भगीरथ द्वारा स्वर्ग से अवतरित[33], ऋषि हारित का भगीरथ सदृश अनेकशः गंगावतरण तीर्थ दर्शन[34], भगवती गंगा की तीनों धराओं से सुशोभित हिमवान[35], विमल प्रवाह में साक्षत जह्नु मुनि का विराजमान होना[36], भगवान शिव के पिंगल जटाजूट में सदैव विराजमान[37], चन्द्रकला सदृश द्युतिमान प्रवाह[38], गंगा महातीर्थ[39], दो पर्वतों क मध्य प्रवाहित पृथ्वी सदृश[40], तिर्यक श्वेत प्रवाह सम्पन्न[41], वसुओ की माता होने से तरंगों व बुद्‌बुदों से चंचल[42], भगवान विष्णु के चरणों से उत्पन्न प्रवाहवाली[43], नूतन पुलिनरेखा से अंकित धारा युक्त[44], ग्रीष्म ऋतु में कृष प्रवाह सम्पन्न[45], सहस्त्रों धाराओं से प्रवाहित होते हुए समुद्रो के प्रवाहों का वमन करना[46], नदियों के कुटुम्ब को ग्रहण कर हिमालय से नीचे कन्दराओं में प्रवेश प्राप्त करना[47], भक्तिमयी स्त्रोतमयी[48], छोटी नदियों का संगम द्वारा अनायास ही समुद्र मिलन[49], इत्यादि रूपो में भगवती गंगा का निदर्शन कादम्बरी कथा में प्राप्य हैं।

यह देवनदी, देवशलीला, मोक्षदायी व पुण्यदायी अनेकशः महनीय, विशिष्ट व अनुपम रूपों में विवेचित है। समग्र नदियों में गंगा सर्वाधिक पवित्र नदी के रूप में हमारे मानस में सुशोभित हैं। इससे पृथक होकर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की कल्पना भी नही की जा सकती हैं। इसका भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण सथान हैं। उद्‌गम गंगोत्री हिमनद[50] उत्तराखण्ड हैं। इसकी कुल लम्बाई 2510 किमी. हैं। इसकी मुख्य सहायक नदियाँ यमुना, रामगंगा, घाघरा, ताप्ती, गंडक तथा कोसी आदि है। इसका दैवीय स्वरूप भारतीय संस्कृति का केन्द्र बिन्दु है। इसके तट पर अनेक तीर्थ स्थल स्थित है। ऋषिकेश हरिद्वार तथा वाराणसी प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। यह शास्त्रों में पतितपावती व मोक्षदायी वर्णित होने से इसके तट पर अवस्थित घाटों पर पवित्र स्नान, ध्यान, पिण्डदान, तर्पण, श्राद्ध आदि कार्य अत्यंत भावशब्लता व आत्मीयता से सम्पन्न किए जाते हैं। प्रसिद्ध औद्योगिक नगर कानपुर इसी तट पर स्थित हैं। यह भारत की राष्ट्रीय नदी है। विशाल भू–भाग को सिंचित, पेयजल व औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए जल, प्रदान करने वाली महनीय नदी है। यह लम्बी प्रवाह यात्रा के साथ बांग्लादेश में पहुंचती है, जहाँ इसका विशिष्ट स्वागत होता हैं।

तट पर स्थित कुंभ, महाकुम्भ और वृहद महाकुम्भ का साक्षी बनता हरिद्वार देवभूमि उत्तराखण्ड का गौरव ही है। यह एक पूर्ववर्ती नदी है। अत्यंत पवित्र धार्मिक नदी 'गंगा' का उद्‌गम केदारनाथ चौट्टी के उत्तर में गऊमुख नामक स्थान पर 6600 मीटर की ऊँचाई पर हैं। यहाँ यह भागीरथी नाम से प्रसिद्ध है। यह नदी अपनी सहायक नदी जाह्नवी से जलग्रहण कर देवप्रयाग के निकट अलकनन्दा नदी से मिलती हैं।[51]

ऋषिकेश से कोलकाता पर्यन्त कोटिशः औद्योगिक इकाईयाँ यथा–चमड़ा उद्योग, रासायनिक खाद, कारखाने आदि स्थित हैं। गंगा' एक्शन प्लान 1985 की स्थापना से गंगा प्रदूषण नियंत्रण व निवारण हेतु अनेकः प्रयास किए गए हैं।[52]

4. **नर्मदाः** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में नर्मदा नदी का पौराणिक निदर्शन वर्णित हैं। सहस्त्रबाहु

की सहस्त्र भुजाओं से छिन्न–भिन्न भुजा प्रवाहवाली[53], वंशवृक्षों के विस्तृत गुल्मों से सम्पन्न प्रवाह युक्त54, इन दो रूपों में ही नर्मदा का सांगोंपांग विवेचन प्राप्य हैं।

यह भारत की एक प्रमुख नदी है जो 'नर्मदा' का ही अपर नाम हैं। नर्मदा अर्थात् नर्म सुख प्रदायिनी नदी। इसके अन्य नाम सोमोद्भवा, सोम पर्वत से निस्तृत और मेकलकन्या' अर्थात मेकल पर्वत की अमरकंटक चोटी[54] से उद्गमित होने वाली नदी। पूर्वी पर्वतीय भाग जहाँ से उद्गम होता है वहाँ 'रेवा' तथा अनन्तर पश्चिमी मैदानी भाग को 'नर्मदा' कहा जाता है। सुप्रसिद्ध नगरी माहिष्मती इसके तट पर स्थित थी। यह नदी 1312 किमी लम्बी हैं।[55] भारत की पवित्र नदियों में गण्य तथा तट पर अनेक धार्मिक स्थल विकसित हैं।[56] छोटे बड़े 100 से अधिक नाले सीधे 'नर्मदा' नदी में मिलने से लगातार प्रदूषित होती जा रही हैं। मध्यप्रदेश की जीवन रेखा नर्मदा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए केंद्र ने 15 करोड़ की सहायता दी हैं।[57]

5. **महानदी:** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में महानदी का संकेत स्वरूप अल्पाप्य भौगोलिक निदर्शन वर्णित हैं। तीव्र प्रवाह[58], संकेत रूप में चन्द्रापीड वर्णन कादम्बरी कथामुख से प्राप्त होता है। सम्भवतः यह मध्य भारत के मध्य छत्तीसगढ़ राज्य के निकट सिहावा से उद्गमित होती है। इस नदी को 'उड़ीसा का शोक भी कहा जाता है। इसका कारण इसकी बाढ़ विभीषिका है। महानदी प्रायद्वीपीय भारत की महत्त्वपूर्ण नदी है। यह लगभग 851 किमी की यात्रा में अनेक वक्राकार मार्ग से प्रवाहित होती है। सियोनाथ, हसदेव, मंड, डूव, घोंघा तेल आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। यह नदी कटक के निकट समुद्र में मिल जाती है।[59]
6. **मंदाकिनी:** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में मंदाकिनी नदी का निदर्शन पौराणिक, दैवीय एवं आलंकारिक नायिका के स्वरूप में वर्णित हैं। मंदाकिनी प्रवाह से सुशोभित हिमालय[60], चन्द्रमा तट से पश्चिमी समुद्र तट उतरना[61], भगवान विष्णु चरण महामुनियों द्वारा सेवित से उद्गम[62], उत्पन्न पुनीत पुण्डरीक पुष्पयुक्त[63], क्षीरसमुद्र द्वारा पाणिग्रहण सम्पन्ना[64], आकाश से अवतरित देवगंगा[65], शंकरजी के हास्य सदृश उज्ज्वल प्रवाहमयी[66], इत्यादि रूपों में भगवती मन्दाकिनी का विस्तृत निरूपण कादम्बरी कथा में प्राप्य है। यह अलकनन्दा की सहायक नदी है। इसका स्त्रोत केदारनाथ के निकट चाराबाड़ी हिमनद हैं। रूद्रप्रयाग में मन्दाकिनी का अलकनंदा से संगम होता हैं।[67] यह गंगोत्री से उद्भूत होकर देवप्रयाग में अलकनन्दा और मन्दाकिनी से मिलने पर इसी को गंगा के नाम से जाना जाता है।[68] इसके तट पर समशीतोष्ण सुखद जलवायु क्षेत्र हैं।[69]
7. **यमुना:** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में यमुना नदी का पौराणिक एवं ऐतिहासिक निदर्शन वर्णित हैं। मतवाले बलदेव के हल से खिच जाने के भय से द्रुतगामिनी[70], मतवाले बलदेव द्वारा हल के अग्रभाग से गगन में फेंकी हुई[71], अपनी नीलामल सदृश श्याम दैहिक दीप्ति प्रवाह से नीले जलवाली[72], श्री बलदेव से भयभीत हो निश्चर्ल स्थित जलयुक्त[73], मरकत मणिमयी तरंग सम्पन्ना इत्यादि रूपों में यमुना वर्णन कादम्बरी कथामुख में प्राप्त होता हैं। यह गंगा की मुख्य सहायक नदी है। इसका उद्गम यमनोत्री ग्लेशियर उत्तरकाशी से 30 किमी उत्तर गढ़वाल में स्थित है। यह प्रयागराज में गंगा से संगम करती है। इसकी सहायक नदियाँ– चम्बल, छोटी सिन्धु, बेतवा और केन हैं।[74] इसके तट पर दिल्ली और आगरा महानगरों के अतिरिक्त इटावा, कालपी, हमीरपुर और प्रयाग मुख्य है। इसकी कुल लम्बाई 1376 किमी. हैं।[75]

ब्रज की संस्कृति में यमुना कालिन्दी अतिविशिष्ट हैं। मार्ग में ब्रज प्रदेश में दोनों ओर प्रसिद्ध वन, उपवन एवं कृष्ण लीला स्थल विद्यमान है। प्राचीनकाल में वृन्दावन में यमुना की अनेक धाराएं थी। वर्तमान में एक ही धारा प्रवाहित होती है। इसके तट पर अनेक सुन्दर घाट, देवालय, छतरियाँ और धर्मशालाएँ हैं। वृंदावन से आगे प्रवाहित होती हुई यह मथुरा को प्राप्त होती है। यहाँ भगवान श्रीकृण ने अवतार धारण किया था। यहाँ भी घाटों का सौन्दर्य अनुपम हैं।[76]

8. **वेत्रवती:** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में वेत्रवती नदी का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं आलंकारिक नायिका रूपों में स्वरूप निदर्शन वर्णित हैं। राजा शूद्रक की विदिशा नगरी के चारों ओर प्रवाहित नदी स्नान

के लिए उतरे जलकुंजरों के मस्तक पर लगे सिन्दूर के घुलने से वेत्रवती नदी का जल सन्ध्याकाल के सदृश रक्त वर्ण होना, जब मालव देश की नारियाँ उसमें स्नान करती तो उनके कठोर स्तनों के आघात से उसकी तरंगे छिन्न–भिन्न होना एवं तट पर निवासरत मदमत्त कलहंस नित्य कोलाहल करते इत्यादि रूपों में वेत्रवती का वर्णन प्राप्य है।[77] वर्तमान में इसे बेतवा नदी नाम से अभिहित किया जाता है। इसकी कुल लम्बाई 400 किमी है। यह बुंदेलखण्ड की प्रमुख नदी है। यह हमीरपुर के निकट 'यमुना' में विलीन हो जाती इसका उद्‌गम विंध्याचल में कुम्हारा गाँव, रायसेन जिला हैं। बीना इसकी मुख्य सहायक नदी है।

प्राचीन काल की सुप्रसिद्ध नगरी 'विदिशा' इसी के तट पर स्थित थी।[78] महाकवि कालिदास ने इसका अत्यंत मनोहारी वर्णन किया है।[79] महाकवि बाणभट्ट कादम्बरी में ''राजा शूद्रक की राजधानी 'विदिशा''' को वेत्रवती नदी के तट पर ही स्वीकारा है।[80] सम्भवतः इसके तट पर बेत के पौधों की बहुलता के कारण इसका नाम वेत्रवती पड़ा हो।

9. **सरस्वतीः** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में सरस्वती नदी का संकेत स्वरूप अल्पाप्य भौगोलिक निदर्शन वर्णित है। सरस्वती समागम से उत्कण्ठापूर्वक[81] रूप में अल्पाप्य वर्णन कादम्बरी कथा में प्राप्य हैं। यह आलंकारिक नायिका के रूप में वर्णित है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत[82] में मेघमार्ग के क्रम में हृदयआह्लादकारी वर्णन किया है, जो ब्र२वर्त के अन्तर्गत है। इसका उद्‌गम हिमालय में रूपण हिमनद हैं।[83] इसकी सहायक नदियाँ यमुना, सतलुज व घग्घर मुख्य हैं। यह पंजाब, हरियाणा व राजस्थान में प्रवाहित होते हुए कच्छ के रण में जाकर अरबसागर में गिरती थी।

हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही, भूगर्भीय गतिविधियाँ चलती रही हैं। सम्भवतः उसके चलते सरस्वती ने अपना मार्ग परिवर्तित किया हो। सरस्वती का गुप्त रूप से प्रवाहित होना[84] और बीकानेर के रेगिस्तान में भूगर्भ में प्राप्ति तथा कुरूक्षेत्र प्रवाह मार्ग में जलाशयों की उपलब्धता भी महाभारत काल में इसके सूखने के परिणाम को दृष्टिगोचर करता है। वस्तुतः कोई नदी एकाएक नही सुखती है। वर्ष दर वर्ष उसमें परिवर्तन के लुप्त या गुप्त प्रवाह में परिवर्तन होता है।

दृषद्वती सरस्वती[85] की मुख्य कहायक नदी थी जो कालान्तर में यमुना अभिहित हुई। भूगर्भिग हलचलों के कारण सरस्वती के प्रवाह में परिवर्तन हुआ और वह यमुना में मिलने लगी। उसी 'यमुना' के साथ सरस्वती प्रयाग संगम तक पहुँचती है। वस्तुतः वहाँ दो ही नदियों का संगम होता है। सरस्वती यमुना सह गुप्त रूप से उपस्थित रहती हैं।

10. **शिप्राः** महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी कथा में सिप्रा नदी का पौराणिक एवं ऐतिहासिक निदर्शन वर्णित हैं। उज्ज्यनी के चारों ओर प्रवाहित और भगवान महाकाल के मस्तक पर सुशोभित देवी गंगा को देखकर जैसे उसकी ईर्ष्या से ही सर्वदा तरंगरूपी भृकुटी चढाकर आकाश प्रक्षालन करने वाली[86], अनेकशः उत्कण्ठाओं से खिन्न हो नगरी बाहर सिप्रा तट पहुँचना[87], चन्द्रापीड का जल में प्रवेश करना व तट पर भगवान कार्तिकेय का मन्दिर[88], हंसों का समूह मानों क्षिप्रा की उँगलियाँ[89], वर्ष के सदृश वेग से प्रवाहित होने वाली नदी[90], एवं प्रास्थानिक मंगल कार्य सम्पन्न हेतु निमित्त खेमा[91], इत्यादि रूपों में अत्यंत आकर्षक व महनीय सिप्रा का वर्णन प्राप्य हैं। इसका उद्‌गम मध्यप्रदेश के महू छावनी के निकट 'जनापाव की पहाडियाँ' हैं। यही भगवान विष्णु अवतार परशुराम का जन्म भी हुआ था। शास्त्रों में मोक्ष प्रदायिनी अर्थात् जन्म मृत्यु के बंधन को मुक्त करने वाली माना गया हैं। तीव्र प्रवाह के कारण इस नाम से सुशोभित किया। यह आगे, प्रवाहित होकर चम्बल में विलीन होती हैं। इसके तट पर प्रसिद्ध उज्जैन नगर स्थित है, जहाँ द्वादश ज्योर्तिलिङ्ग में विशिष्ट बाबा महाकालेश्वर का मन्दिर स्थित हैं। प्रत्येक द्वादश वर्षों में यह महाकुम्भ की साक्षी बनती हैं। इसके घाटों पर पवित्र स्नान की परम्परा का निर्वहन किया जाता हैं। इसके तट पर प्रसिद्ध सांदीपनी आश्रम स्थित हैं। जहाँ भगवान श्रीकृष्ण बलराम और उनके सखा सुदामा ने विद्याध्ययन किया था। राजा भर्तृहरि ने और गुरु गोरखनाथ ने इसी के तट पर तपस्या द्वारा सिद्धि अर्जित की थी। इसके तट पर अनेक घाट स्थित हैं जिसमें रामघाट प्रमुख है, जहाँ प्रभु श्रीराम ने महाराज दशरथ का श्राद्धकर्म और तर्पण किया था।

अवन्ती राज्य की राजधानी उज्जयिनी की गणना प्राचीन सप्तपुरियों में की जाती है।[92] विशाल अवन्तिका आदि नामों से विख्यात यह नगरी शिप्रा नदी के दाहिने तट पर वर्तमान उज्जैन नगर से 3–4 किमी उत्तर में स्थित थी।[93] चर्मण्वती की सहायक शिप्रा नदी का उद्गम पौराणिक मतानुसार ''शिप्रसरोवर''[94] या पारियागपर्वत[95] से माना जाता है। यह पुण्यसलिला – पापमोचिनी–उत्तरवाहिनी है।[96]

निष्कर्ष

साहित्य में अत्यंत द्योतक स्वरूप में प्रवाहित नदियाँ लोकमंगल का पुण्यकर्म करती हैं। ये सरिताएं पापमोचिनी, मोक्षदायिनी, पुण्यफलप्रदायिनी, अलंकारिक नायिकाएँ, प्रान्त भूमियों को संतृप्त करने वाली, तीर्थों को जीवन प्रदायिनी, समग्र प्राणिजगत को जीवनदायिनी हैं। विवेच्य शोधपत्र में आकाशगंगा, मंदाकिनी, गंगा, नर्मदा, यमुना, वेत्रवती, सरस्वती इत्यादि के अत्यंत महनीय विशिष्ट निदर्शन प्राप्त होता हैं।

अत्यंत खेद का विषय है कि ये देव सरिताएं प्रतिदिन आचमन अयोग्य होती जा रही हैं। शोधपत्र से मानवजीवन को नई दृष्टि मिल सकेगी। नदियों में मानवजनित प्रदूषण के कारणों की खोज समूचित प्रदूषण नियन्त्रण हो सकेगा। साहित्य के उज्ज्वल नदी स्वरूपों से मानव मात्र के हृदय में नदी संरक्षण, संवर्द्धन एवं पुर्नभरण पर नवीन चिन्तन आत्मसात् हो सकेगा।

समय–समय पर सरकारों द्वारा किये जा रहे प्रयासों को जन सामान्य का समर्थन प्राप्त हो सकेगा एवं उक्त विषय पर कार्ययोजना आदि हेतु नवीन आत्मबोध मानव मात्र को उर्जा, ओज, तेज–बल प्राप्त करा सकेंगा।

सन्दर्भ सूची

1. 233 / पूर्वभागः – कैलास इव सवत्सोतस्विनोसोतोराशिः।
2. 248 / पूर्वभागः – उत्सिञ्चन्सरित।
3. 252 / पूर्वभागः –तदेनं तावदागृहीतकतिपयदूर्वा प्रवालकवलं कस्मिश्चित्सरसि शिलाप्रस्त्रवणे वा सरिदम्भसि वा स्नातपी– तोदकमप नीतश्रमं.....।
4. 265 / पूर्वभागः – अन्तरान्तरा कैलासतरंगिणीतरंङ्गित सिकतिलतल भूमिभागैः।
5. 322 / पूर्वभागः – यतौ हि निवारयसि प्रबलरजः प्रसरकलुषितानि.....।
6. 379 / पूर्वभागः – चान्तर्निपत–न्तमाभरणकिरणालोकं संपिण्डितं, नदीवेणि काजलप्रवाहमिव वहन्तम् पश्यत्।
7. 433 / पूर्वभागः – अत्र कुसुमधुलिसि–कतिले गिरिनदीकातटे भगवानर्चितः शूलपाणिः।
8. 437 / पूर्वभागः – सर्वतो निसृन्ष्टदष्टि५ष्ट वान्क्व चिदुभयतट निखाततमाल–पल्लवकृतवनलेखाः कुमुदधूलिबालुकापुलिनमालिनी श्चन्दनरसेन प्रवर्त्यमाना।
9. 488 / उत्तरभागः – क्रीडापर्वतके बालगिरिनदिकासु।
10. 539 / उत्तरभागः – विस्तारयद्भिरिव सरित्पुलिनानि।
11. 565 / उत्तरभागः – एकसन्तानावलीघा–रावर्षवेगवाहिन्या निर्झरिण्येव कुल्लया परिक्षिप्तम्।
12. 601 / उत्तरभागः – अवसाने स्त्रोतस्विनीनां पात्रम्। अपि च दुस्तरैर्नदीपूरैरेव.....।
13. 604 / उत्तरभागः – विशीर्यमाणपर्याणसमायोगेनोपर्युपरिवाहिनीतीरोत्तार संतानावान पृष्ठेना।
14. 614 / उत्तरभागः –किं वा लीला सरित्पु–लिनैर्मलयानिलेन वा इति।
15. 647 / उत्तरभागः –इद्दमफुल्लेन्दीवरजोवाससुरभिषु वासरेषु सलिलापसरण क्रमतरुङ्गयमाणसु सु कुमारतीरसैकतरेखासु।
16. 51 / पूर्वभागः – सुरगजोन्मूलितविगलदाकाशगङ्गाकमलिनी शङ्कामुत्पादयन्तः।

17. 107 / पूर्वभागः — हरजटाचन्द्रेणेव कोटिसारेण मैनाकेनेवाविदि—तपक्ष पातेन मंदाकिनी प्रवाहेणेव प्रकटितकन कपद्यराशिना।
18. 233 / पूर्वभागः — ऐरावत इव मन्दाकिनी मृणालजालजटिलः।
19. 292 / पूर्वभागः — अभ्रगङ्गास्त्रोतो जलप्रक्षालितेन।
20. 386 / पूर्वभागः — आकाशकमलिनीमिव..... ।
21. 410 / पूर्वभागः — आहोस्विदनिलविकीर्यमाणसीकरधवलितभुवनाम्बरसिन्धुः कुतूहलाद्धरातलमवतीर्ण इति।
22. 443 / पूर्वभागः — आकाशकमलिनीमिव स्वच्छाम्बरतलदृश्यमानमृणाल।
23. कुमारसम्भवं — 1 / 1।
24. भारत का बृहद भूगोल — पृ. 77।
25. पूर्वभाग विन्ध्यावटी वर्णन पृ. 43 — सरिता च कलशयोनिपरिपीतसागरमार्गानुगतयेव बद्धवेणिकया गोदावर्या परिगतमाश्रम पदमासीत्।
26. भारत का वृहद भूगोल — पृ. 79।
27. रामायण, 3.13.13।
28. वराह पुराण।
29. एपिग्रैफिया इण्डिका, जिल्द 8, पृ. 59—96।
30. बम्बई गजेटियर, जिल्द 6, पृ. 517—518, 529—531 एवं 522—526।
31 नवभारत टाइम्स — 20 दिसम्बर 2018, 1.30 (मुम्बई उच्च न्यायालय)।
32. पूर्वभाग पृ. 56 — कम्पयन्निव तरून्भगीरथावतार्यमाणगङ्गाप्रवाहकलकलबहलो।।
33. पूर्वभाग पृ. 78 भगीरथ इवासकृद्दृष्टगंगावतारः।
34. पूर्वभाग वहीं — त्रिपुण्ड्रकेण तिर्यक्प्रवृत्तत्रिपथगास्त्रोतस्त्रयेणहिमगिरिशिलातलेनेव ललाटफलकेनोपेतम्।।
35. पूर्वभाग पृ. 89 — उद्वमदमलगङ्गाप्रवाहमिव जह्नुम्।
36. पूर्वभाग पृ. 114 — प्रलयानलशिखाकलाप कपिलजटाभारभ्रान्तसुर सिन्धुरन्धकारातिः भगवान्।
37. पूर्वभाग पृ. 131 — हरमुकुटचन्द्रलेखेव गङ्गास्त्रोतसा..... ।
38. पूर्वभाग पृ. 191 — महातीर्थमिव।
39. पूर्वभाग पृ. 195 — अचलमध्यस्त्रवदगङ्गाप्रवाहमिव मेदिनीम्।।
40. पूर्वभाग पृ. 237 — तिर्यगावर्जितश्वेतगंगाप्रवाहेण।
41. पूर्वभाग पृ. 221 — गङ्गेव वसुजनन्यपि तरंगबुद्बुदचंचला।।
42. पूर्वभाग पृ. 241 — त्रिपथगाप्रवाह इव हरिचरणप्रभवः।
43. पूर्वभाग पृ. 291 — गङ्गाप्रवाहमुद्धासमानम्।
44. पूर्वभाग पृ. 319 — निदाधगंगाप्रवाहमिव क्रशिमानमागतम्।
45. पूर्वभाग पृ. 333 — वहता चन्दनरसनिर्झरनिकरानिव क्षरताऽमृतसागर पूरा—निवोन्दिरता श्वेतगङ्गाप्रवाह सहस्त्राणीववमता..... ।
46. पूर्वभाग पृ. 441 — अशेषसरित्परिन्वारामिव भगवती गङ्गा हिमवतो गुहातलगताम्।।

47. पूर्वभाग पृ. 461 – स्वदेशभाषानिबद्धभागीरथी भक्तिस्त्रोतत्रनर्तकेन।
48. उत्तर भाग पृ. 484 – गङ्गा प्रविश्य भुवि तन्मय तामुपेत्य स्फीताः समुद्रभितरा अपि यान्ति नद्यः।
49. द्विवेदी कै.ना., का. की. कृ भौ. प्रत्यः, पृ. 96।
50. भारत का बृहद भूगोल– पृ. 77।
51. आने वाले समय में मैली नहीं रहेंगी राम की गंगा–दैनिक भास्कर अभिगमन तिथि – 30 जून 2009।
52. पूर्वभाग पृ. 60 – अभिमुखमापतच्च तस्माद्वनान्तरादर्जुनभुजदंडसहस्त्र पिप्रकीर्णमित्र नर्मदाप्रवाहम्।
53. पूर्वभाग पृ. 115 – नर्मदाप्रवाह इव महावंशप्रभवः।
54 भारत का भूगोल– पृ. 97।
55. वृहद्ध भारत का भूगोल– पृ. 76।
56. वहीं पृ.76
57. https:// hindi.Indiawaterportal.org, https:// www.bhaskar.com-news
58. चन्द्रापीड़ वर्णन पृ. 193 – महानदीप्रवाहमिव सर्वदुरितापहरम्।
59. भारत का वृहद भूगोल– पृ. 78।
60. पूर्वभाग पृ. 33 – अतिधवलजलधरच्छेदशुचिता दुकूलपटपल्लवेन तुहिन गिरिरिव गमनसरि–त्स्त्रोतसा कृ तशिरोवे– ष्टनः।
61. पूर्वभाग पृ. 53 – मन्दाकिनी पुलिनादपरजलनिधितटमवतरति चन्द्रमसि।
62. पूर्वभाग पृ. 114 – मधुसूदनचरण इव सुरसरित्प्रवाहस्य प्रभवः सत्यस्य।
63. पूर्वभाग पृ. 268 – शुचिभिर्मन्दाकिनीपुण्डरीकैः।
64. पूर्वभाग पृ. 286 – तां च द्वितीयकुलाधिपतिर्हसो मन्दाकिनीमिव क्षीरसागरः प्रणयिनीमकरोत्।
65. पूर्वभाग पृ. 275 – अमरापगामिव नभसाऽवतीर्णाम्।
66. पूर्वभाग पृ. 300 – हरहसित सितस्त्रोतसं मन्दाकिनीमवततार।
67. द्वि. कै. ना. का. की. कृ.भौ. प्र. पृ. 128 Law B. C. Geographical Aspect of Kalidas works p. 41.
68. लाहा बि.च, प्रा. भा.ए.भू. पृ. 53 ।
69. द्विवेदी कै. ना. का. की. कृ.भौ. प्र. पृ. 224।
70. पूर्वभाग चाण्डालकन्या वर्णन – उन्मदह्लिहलाकर्पणभयपलायितामिव कालिन्दीम्। (कथान्तर में एक बार मदिरा पीकर मतवाले बलराम ने जलक्रीडा के लिए यमुना को निमंत्रण दिया किन्तु उसका अनादर करती हुई वह उनके समीप नही आयी। इससे कुपित होकर उन्होंन उसे हल से अपनी ओर खींच लिया था।)
71. पूर्वभाग पृ. 51 – मदकलबलभद्रहलमुखाक्षेप विकीर्ण बहुस्त्रोतसमम्बर तले कलिन्दकन्यामिव दर्शयन्तः।
72. पूर्वभाग पृ. 61 – असितकुवलयश्यामलेन देहप्रभाप्रवाहेण कालिन्दीजलेनेव पूरितारण्यम्।
73. पूर्वभाग पृ. 409 – सीरायुधहलभय।
74. बंसल, सुरेश चन्द्र (2015–16) भारत का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृ. 94।
75. वहीं–(1)

76. वन पर्व महाभारत – 84, 85।
77. पूर्वभाग पृ. 470 – तत्र च सुधाधवलां कालिन्दीजलतरङ्गमय्येव मरकतसोपान मालया.....।
78. पूर्वभाग – कादम्बरी पृ. 470।
79. मेघदूत – पूर्वमेघ– 26।
80. वहीं (1)
81. पूर्वभाग पृ. 11 चाण्डालकन्या वर्णन –मज्जन्मालवविलासिनी कुचतटास्फालनजर्जरिन्तोर्मिमालया जलावगाहनागत– जलकुञ्जरकुम्भसिन्दूरसंध्यायमानसलिल–योन्मदकलहंसकुलकोलाहल मुखरीकृतकूलया वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्।
82. 52 पूर्वमेघ।
83. सिरमौर जिला – विकिपीडिया, 2021–02–12, अभिगमन तिथिः 2022–03–30।
84. 9/3 – रघुवंशम्।
85. महाभारत– 3.81.115, वी. एस. वाकणकर और भी सी एन, पश्चुरी;द लॉस्ट सरस्वती रिवर, मैसूर 1994, पृ. 45।
86. पूर्वभाग पृ. 291 – पुण्यपताकायमानसा सरस्वतीसभागमोत्कण्ठा कृत.....।
87. पूर्वभाग पृ. 107 – भगवतो महाकालस्य शिरसि सुरसरितमालोक्योप जातेर्ष्ययेव सततसमाबद्धतरङ्गभृकुटिलेखया खमिवक्षालयन्त्या सिप्रया परिक्षिप्ता।
88. उत्तरभागः पृ. 501 – सचक्रवाकचक्रवालाक्रान्तसरससुकुमार सैकतानि सिप्रातटान्य नुसरन्।
89. उत्तरभागः पृ. 502 – आत्मनाप्यूरुदध्नेन पयसोतीर्थ सिप्रां तस्मिन्नेव भगवतः कार्तिकेयस्या–यतनेततप्रतिवार्तां प्रतिपालयन्न तिष्ठत्।
90. उत्तरभागः – तरतरङ्गा निलस्पर्शमात्रोपलक्ष्य सलिलसंनिधि.....।
91. उत्तरभागः पृ. 565 – एकसन्तानावलीघा–रावर्षवेगवाहिन्या निर्झररिण्येव कुलयया परिक्षिप्तम्।
92. अयोध्या मथुरा माया– काशी कांची अवन्तिका । पुरी द्वारावती चौव सप्तैता मोक्षदायिकाः।
93. द्विवेदी कै. ना.,का. की. कृ.भौ. प्रत्यः पृ. 215।
94. चतुर्वेदी सी. रा., अभिधान कोश, पृ. 173।
95. मार्कण्डेय पुराण 57.19–20 Law B. C. Geographical Aspect of Kalidas works p. 38।
96. लाहा वि.च, वहीं, पृ. 549।

****